ध्रुवयात्रा कहानी की समीक्षा

'ध्रुवयात्रा' कहानी जैनेन्द्र कुमार जी द्वारा रचित है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा इस प्रकार है —

कथानक/कथावस्तु :—

कहानी का आरम्भ राजा रिपुदमन की ध्रुवयात्रा से वापस लौटने से प्रारम्भ होता है। कहानी का विकास रिपुदमन और आचार्य मारुति के वार्तालाप, तत्पश्चात रिपुदमन और उसकी अविवाहिता प्रेमिका उर्मिला के वार्तालाप और उर्मिला तथा आ० मारुति के मध्य हुए वार्तालाप से होता है।

कहानी के मध्य में ही पता चल जाता है, कि उर्मिला ही मारुति की पुत्री है। कहानी का अन्त राजा रिपुदमन की आत्महत्या के साथ होता है। कहानी में सुसंस्कारित युवती के उत्कृष्ट प्रेम की पराकाष्ठा को दर्शाया गया है। प्रेम को नारी से बिल्कुल अलग और सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया है। कथावस्तु की दृष्टि से कहानी सफल है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण :—

ध्रुवयात्रा कहानी में अधिक पात्र नहीं हैं। तीन पात्रों के माध्यम से सम्पूर्ण कहानी घटित हुई हैं। राजा रिपुदमन बहादुर जिन्हे आप कथा का नायक कह सकते हैं तथा उर्मिला नायिका हैं। आप मारुति जो कि एक चिकित्सक हैं साथ ही उर्मिला के पिता भी। अतः कहानी में कम पात्र होने से भी सफल रही हैं।

कथोपकथन/संवाद :—

कहानी के संवाद सरस, सरल एवं पात्रानुकूल हैं। संवाद अधिक लम्बे न होने के कारण पाठक के मन को मोहते हैं।

यथा —

"हाँ! स्त्री से रही हूँ, प्रेमिका प्रसन्न है। स्त्री की मत सुनना, मैं भी पुरुष की नहीं सुनूँगी।"

इस प्रकार कथोपकथन एवं संवाद की दृष्टि से कहानी अधिक सफल रही हैं।

देशकाल एवं वातावरण :—

कहानी में देशकाल एवं वातावरण के सजीव एवं सफल चित्रण से कथानक में सजीवता एवं विश्वसनीयता का संचार हुआ है। कहानीकार ने अधुनिकभारत के राजा के प्रेम का चित्रण किया हैं। देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से कहानी ध्रुवयात्रा सफल सिद्ध होती हैं।

भाषा-शैली :—

भाषा सरस, सरल एवं पात्रानुकूल है। साहित्यिक खड़ीबोली में तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। शैली सुबोध एवं पाठक के प्रति हृदयंगम है। कथाशैली के भी दर्शन होते हैं।

उद्देश्य :—

प्रस्तुत कहानी में कहानी कार जैनेन्द्र जी ने बताया है कि प्रेम एक पवित्र बन्धन है और विवाह में स्वार्थता है। प्रेम की भावना लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होती है, परन्तु विवाह बाधक।

इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते हैं कि कहानी का मुख्य उद्देश्य प्रेम को ही सर्वोच्च ठहराना है।

शीर्षक :—

कहानी का शीर्षक 'ध्रुवयात्रा' आकर्षक एवं जिज्ञासा पूर्ण है। सम्पूर्ण कहानी ध्रुवयात्रा पर ही टिकी हुई है। अतः शीर्षक के नामकरण में लेखक सर्वाधिक सफल रहा है।

उर्मिला का चरित्र-चित्रण

जैनेन्द्र जी द्वारा रचित ध्रुवयात्रा कहानी की प्रमुख पात्रा उर्मिला का चरित्र-चित्रण निम्न बिन्दुओं के आधार पर इस प्रकार है—

सच्ची प्रेमिका :—

उर्मिला युवावस्था में राजा रिपुदमन के प्रेमपाश में फँस जाती है। राजा रिपुदमन सामाजिक कारणों से विवाह नहीं कर पाते हैं। जब वह माँ बनने वाली होती है तो वह विवाह से इनकार कर देती है। वह कहती है कि "प्रेम और विवाह में अन्तर होता है प्रेम पवित्रता युक्त एवं विवाह स्वार्थता से युक्त होता है।"

सुसंस्कारित युवती :—

नायिका उर्मिला एक संस्कारवान एवं सभ्य युवती है। बचपन में अपनी माँ से उच्च संस्कार प्राप्त हुए हैं।

इसीलिए वह राजा रिपुदमन को उसके लक्ष्य के लिए प्रेरित करती है।

दार्शनिक विचारों वाली :—

उर्मिला शिक्षित स्पष्ट एवं स्वतन्त्र विचारों वाली युवती हैं। उसके विचारों में दार्शनिकता मौजूद है। वह अपने विचारों को उच्च स्तर पर प्रकट करती है।

स्वतंत्र विचारों वाली :—

उर्मिला स्वतंत्र विचारों वाली युवती है। वह विवाह के लिए मना कर देती है। इससे स्पष्ट है कि उर्मिला के विचारों में उत्कृष्टता एवं स्वतंत्रता है।

ज्ञानवान एवं पितास्नेही :—

उर्मिला विदुषी स्त्री है, उसके बोलने मात्र से ही उसके विचारों में स्पष्ट ज्ञान की झलक का आभास होता है। वह अपने पिता को नहीं जानती फिर भी अपार स्नेह करती है।

मातृभाव एवं पुत्रवत्सल :—

उर्मिला एक अविवाहिता माँ है, फिर भी उसके हृदय में पुत्र के प्रति अगाध प्रेम के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार उर्मिला विदुषी, उच्च नैतिक एवं दार्शनिक प्रवृत्ति वाली युवती के रूप में प्रकट है।